(33)

जागो और पहिचानो

श्रीमती रानी भगत, कानपुर

जागो और जगाओ ये शब्द बार-२ अन्तरात्मा को झझोड़ कर रख देते हैं। मन में यह प्रश्न उठता है कि जागना किसे कहते हैं और यहां कैसे जागा जा सकता है। वैसे तो परमधाम में हम राजी के सन्मुख बैठ कर जागकर ही इस खेल को देख रहे हैं। वहाँ से ना यहाँ पर आए हैं और ना ही यहाँ से वहाँ जाना है।

यह बात तो सत्य है फिर परमधाम की सम्पूर्ण लीला यहाँ किस लिए आयी है। खिलवत की बैठक की गुझ बातें, पच्चीस पक्षों का बयान, धनी के शृंगार का वर्णन, वहाँ के पशु पक्षी जानवरों का वर्णन, यहाँ तक कि धनी ने अपने एक-२ अंग का वर्णन वाणी में किस लिए किया है। ये बाते तो उनके प्यार की थीं, इसे दुनियाँ के सामने क्यों जाहिर कीं, अपने प्यार की बाते इतने खुले रूप में क्यों वर्णन की। तो हम सोचने पर मजबूर हो जाते हैं कि परमधाम के सुख की बातें सिर्फ उनकी अगंनाओं के लिए ही हैं और वह अगंनाए तो परमधाम में उनके चरणों के पास ही बैठी हैं और वहाँ से बैठकर ही यह जगतरूपी नाटक को देख रही हैं। फिर यहाँ पर वह किस प्रकार आयी जिसके लिए उन्हें परमधाम का अनमोल खजाना यहां लाना पड़ा।

परमधाम में जैसे ही राजी ने यह नाटक दिखाना शुरू किया वैसे ही सखियों ने उस नाटक पर अपना ध्यान पूर्ण रूप से केन्द्रित कर दिया और अपनी नजर को उस नाटक से बांध दिया। नाटक देखते -२ वह इतनी अधिक आकर्षित हो गयीं कि नाटक के पात्रों को अपना ही अक्स समझ लिया और नाटक देखते -२ स्वयं ही नाटक खेलने लगी।

यह नाटक तिलस्मी था। जिसमें ऐसे चक्रव्यूह की रचना की गयी थी जिससें कोई बाहर न निकल सके। इसलिए पहली बार ब्रज में राजी ने रुहों के ध्यान को अपने ऊपर ही केन्द्रित किया हुआ था। और हमारे साथ-साथ रहे थे। इसलिए हम भी उन्हें नहीं भूली थी और राजी के साथ आनन्द लेती हुयी ब्रज रास की लीला करके परमधाम पहुंची तो हम सब कहने लगी कि इतना अच्छा नाटक अभी हमने पूरा देखा ही कहाँ है। हम तो एक मिनट के लिए भी आपको नहीं भूली और आपके साथ ही खेलती रहीं। नाटक का आनन्द तो हमने लिया भी नहीं। राजी ने उनकी इच्छा को पूरा करने के लिए सखियों का पूरा ध्यान जो अपने ऊपर केन्द्रित किया हुआ था, हटा कर खेल पर केन्द्रित कर दिया, उन अक्सों को जिनको रुहों ने अपना अक्स समझ लिया था उन्हें उन्ही रुहों का नाम दे दिया। ताकि वह खेल का आनन्द पूरी तरह ले सके। खेल खेलते खेलते वह उसमें इस प्रकार खो गयीं और इस मायावी जाल के प्रभाव से यह भूल गयीं कि हम परमधाम में बैठी है। वह इस तिलस्मी

Nijanand App

चक्रव्यूह में इस प्रकार फँस गयीं कि अपनी यादाश्त को ही खो बैठीं। वह अपने पिया को, अपनी बैठक को, अपने घर को सबको भूल गयीं। खो जाने व भूल जाने में बड़ा अन्तर होता है। सोए हुए को जगाना आसान होता है लेकिन भूली याद को वापिस लाना बड़ा कठिन कार्य होता है। उसकी याद वापिस लाने के लिए उसकी सबसे प्रिय वस्तु को उसके सामने लाना पड़ता है जिससे वह अत्यधिक प्यार करता था। वही हाल हम लोगों का हुआ है। हम भी अपनी याद खो चुकी हैं और सब कुछ भूल गयी हैं।

जब राजी ने रुहों का यह हाल देखा तो घर की याद दिलाने के लिए उन्हें नाटक के अक्सों में अपना अक्स मिलाकर हमारे जैसा ही तन धारण करके हमारे बीच में आना पड़ा। पहले सुन्दरबाई की रुह में, फिर इन्द्रावती की रुह में बैठकर हम सबको जगाया। रुहें जागीं पर उनकी पहचान न कर सकीं। जब सुन्दरबाई के हृदय में धनी विराजमान थे तो इन्द्रावती की रुह उन्हें न पहचान सकी। जब बालबाई धनी की पहचान कराती हुयी मेहराज ठाकुर से कहती है कि अगर तुमने इनको धाम धनी समझा होता तो दिन रात इनकी परिक्रमा करते, सेवा करते व इनसे एक पल भी अलग न हुए होते। यह बातें सुनकर इन्द्रावती की रुह को चोट पहुँची और उन्होंने मन में यह निश्चय कर लिया कि अब मैं इनसे एक पल के लिए भी अलग नहीं रहूँगा लेकिन ऐसा न हो सका। धनी ने हर रुह पर हँसी करनी है लेकिन उन्हें यह मौका ही नहीं दिया कि वह उन्हें पहचान कर उनकी सेवा कर सके। उन्हें तुरन्त अहमदाबाद भेज दिया और वहाँ से आने पर फिर अरब भेज देते हैं। नौ साल की जुदाई के बाद जब वह उनके पास आते हैं, उनके पास इतना समय नहीं होता कि वह धनी की सेवा कर सके। क्योंकि जिस तन में बैठकर वह सामने आए वह तन ही नहीं रहता। उसके बाद इन्द्रावती की रुह ने इतना विलाप किया कि अपने जीव को उस विरहाग्नि में समाप्त कर दिया। तब धनी ने अपना बल देकर खड़ा किया और उन्हीं के हृदय रूपी धाम में अपना आसन लगा लिया। और रुहों को अपनी पहचान करायी। लेकिन कोई भी रुह अपना धनी मानकर उनकी पहचान न कर सकी उनकी यह अवस्था देखकर धनी अधीर हो उठे और पुकार—२ कर यह याद दिलाते हैं –

'रुहो मैं रे तुम्हारा आशिक,
मैं मुख सदा तुम्हें चाहो,

और कहा–

"मैं तुम्हारा मासूक तुम मेरे आशिक
और तुम मासूक मैं आशिक,
ए मैं पुकार या खलक"

अपने प्यार का वास्ता देकर कहते हैं कि–

दोस्ती हक हमें सगी,
क्यों भुलाय देई मोमन।
तुम जो रुहे अरस की,
मेरे अरस के तन ॥

उनकी बातें सुनकर सब रुहों का दिल रो पड़ता है। लेकिन पहचान फिर भी नहीं होती। धनी अपनी पहचान कराने के लिए परमधाम का सम्पूर्ण खजाना वाणी के रूप में लाए जिसमें परमधाम के जर्रे -२ का वर्णन किया गया है। वह अपने स्वरूप का वर्णन

Nijanand App

करके कहते हैं कि जिन नैनों को देखकर कभी तुम उनकी मस्ती में मदहोश रहती थीं जिस नूरी मुख से तुम्हारे नेत्र हटते नहीं थे। जिनकी वाणी को सुनने के लिए तुम्हारे कान बेताब रहते थे अब उसी नूरी मुख को देखने के लिए तुम्हारे नैना तरसते भी नहीं हैं।

मासूक मुख देखन को नैना भी न तरसत"

धनी कहते हैं कि मैं तुम्हारे सम्मुख खड़ा हूँ लेकिन तुम मेरी तरफ आँख उठाकर देखती भी नहीं हो –

धनी सिर पर इन विध खड़े,
देखत ना हक तरफ ।
बैठे मासूक जाहेर पर,
दिल ना लगे इत ॥

आज भी धनी हमारे बीच में हैं और कह रहे हैं कि अगर खेल को समाप्त करना चाहती हो तो उठो खिलवत की बातों को याद करो और दिन रात उन्हीं बातों का चिन्तन करो और अपनी सुर्त को मूल मिलावे में ले जाओ। जैसे परमधाम की सब बातें तुम्हारे हृदय में चुभेंगी वैसे -२ परमधाम के सब दृश्य आंखों के सामने घूमने लगेगें। यहाँ बैठे –२ परमधाम में मूल मिलावे की बैठक दिखाई देगी जहाँ तुम बैठकर खेल देख रही हो। जब तक जागकर यह सम्पूर्ण सुख का अनुभव नहीं होगा तब तक कोई भी ब्रह्म अंगना धाम में जाग्रत नहीं हो सकेगी।

"एही अपनी जागनी जो याद आवे निज सुख।
इश्क याही सो आवही याही सो होइय सन्मुख"

जब हक याद जो आवही,
तब रुह देख्या चाहे नजर।

इसके लिए सबको मिलकर यहां भी उसी प्रकार मूल मिलावे की बैठक बनानी होगी और उसी प्रकार से एक दिल होकर राजी के इलम और इश्क को लेकर अपनी निसबत की और अपने धनी की पहचान करके सम्पुर्ण खेल का आनन्द लेते हुए मूल मिलावे में उठना है।

Nijanand App